नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

आजादी , असहमति और संवाद !

स्वाधीनता का अर्थ केवल पराधीनता की बेड़ियों से मुक्ति नहीं होता. स्वाधीनता उस चेतना का नाम है, जिसमें व्यक्ति को प्रश्न पूछने, विचार रखने, अपनी राह चुनने और सत्ता से असहमति व्यक्त करने का अधिकार प्राप्त हो. इसलिए स्वाधीनता दिवस केवल अतीत की उस ऐतिहासिक विजय का उत्सव नहीं है, जिसने भारत को विदेशी शासन से मुक्त कराया, बल्कि यह उस लोकतांत्रिक चेतना के उत्सव का अवसर भी है, जिसने विविधताओं से भरे इस देश को एक सूत्र में बांधे रखा है.

आजादी के 80 वें वर्ष में जब हम विकसित भारत के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहे हैं, तब यह विचार करना स्वाभाविक है कि हमारी लोकतांत्रिक शक्ति का वास्तविक आधार क्या है. क्या वह सभी का एक जैसा सोचना है? निश्चित रूप से नहीं. भारत की शक्ति तो इस बात में रही है कि यहां अनेक विचार, अनेक मत, अनेक भाषाएं, अनेक आस्थाएं और अनेक जीवन-दृष्टियां साथ-साथ अस्तित्व में रही हैं. हमारे लोकतंत्र की सुंदरता एकरूपता में नहीं, बल्कि विविध स्वरों के बीच सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता में है.

इसी संदर्भ में असहमति लोकतंत्र की कमजोरी नहीं, उसकी जीवनधारा है. असहमति प्रश्न खड़े करती है, सत्ता को आईना दिखाती है और समाज को जड़ होने से बचाती है. स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास स्वयं इसका प्रमाण है. महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, सुभाषचंद्र बोस, वीर सावरकर, डॉ. आंबेडकर और भगत सिंह के विचारों और संघर्ष की पद्धतियों में गहरे अंतर थे, लेकिन इन मतभेदों ने भारत की स्वतंत्रता की आकांक्षा को कमजोर नहीं किया. अलग-अलग विचारों ने ही स्वतंत्र भारत की वैचारिक जमीन को व्यापक बनाया. दरअसल, असहमति की गरिमा तभी तक सुरक्षित रहती है, जब तक उसके साथ संवाद का संस्कार जीवित रहता है. संवाद का अर्थ केवल अपनी बात कहना नहीं, दूसरे की बात सुनने का धैर्य रखना भी है. जब संवाद समाप्त होता है, तब असहमति अविश्वास में और अविश्वास टकराव में बदलने लगता है. आज के डिजिटल दौर में यह चुनौती और गंभीर है. सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति के अवसर बढ़ाए हैं, लेकिन साथ ही समाज को वैचारिक खांचों में बांटने का खतरा भी पैदा किया है. ऐसे समय में दूसरे मत को सुनना भी लोकतांत्रिक जिम्मेदारी है.

हाल के युवा और छात्र आंदोलनों को भी इसी दृष्टि से देखने की आवश्यकता है. युवाओं का प्रश्न पूछना और व्यवस्था से असहमति जताना लोकतंत्र का स्वाभाविक हिस्सा है. लेकिन सरकार और व्यवस्था के लिए चिंता का विषय बनने वाली परिस्थितियों का समाधान भी केवल संवाद से ही संभव है. सरकारों को यह स्मरण रखना चाहिए कि चुने हुए प्रतिनिधि लोक से शक्ति प्राप्त करते हैं और लोक की आवाज सुनना उनकी लोकतांत्रिक जिम्मेदारी है. दूसरी ओर आंदोलनकारी युवाओं को भी यह समझना होगा कि अधिकारों के साथ उत्तरदायित्व जुड़ा होता है. आंदोलन की ताकत उसकी शांति, संयम और नैतिक ऊंचाई में होती है. वर्ष 2047 का विकसित भारत केवल मजबूत अर्थव्यवस्था, आधुनिक बुनियादी ढांचे और तकनीकी प्रगति से परिभाषित नहीं होगा. वास्तविक विकसित भारत वह होगा, जहां नागरिक विचारों की स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी का बोध भी रखें, जहां सत्ता असहमति को सुने और समाज असहमति को सहने का संस्कार विकसित करे.

इस स्वाधीनता दिवस पर इसलिए केवल तिरंगे को सलाम करना पर्याप्त नहीं. हमें उस लोकतांत्रिक मूल्य-व्यवस्था को भी प्रणाम करना होगा, जिसने हमें अलग होकर भी साथ रहने की शक्ति दी है. आइए, आजादी को अधिकार के साथ जिम्मेदारी, असहमति को विरोध के साथ विमर्श और संवाद को केवल शब्दों के आदान-प्रदान के बजाय लोकतंत्र की जीवन-पद्धति बनाने का संकल्प लें. क्योंकि आजादी हमें स्वर देती है, असहमति लोकतंत्र को जीवंत रखती है और संवाद उन स्वरों को राष्ट्र की सामूहिक शक्ति में बदलता है.

स्वतंत्र भारत के मशालवाहक

सी.पी. राधाकृष्णन

भारत के 80वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के इस महत्वपूर्ण अवसर पर मैं प्रत्येक भारतवासी को हार्दिक बधाई देता हूं। साथ ही, मैं उन सभी स्वतंत्रता सेनानियों को सादर नमन करता हूं, जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया.

पिछले सप्ताह अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह की अपनी यात्रा के दौरान मुझे हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत हमारे राष्ट्रीय ध्वज फहराने तथा महान देशभक्त नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी द्वारा तिरंगा फहराए जाने की ऐतिहासिक स्मृति को नमन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. यह मेरे लिए अत्यंत भावुक और गौरवपूर्ण अनुभव था कि मैं उस पवित्र धरती पर खड़ा था, जहां नेताजी की आज़ाद हिंद फ़ौज ने 30 दिसंबर 1943 को भारत की भूमि पर पहली बार तिरंगा फहराया था.

इस अवसर ने मुझे सितंबर 1939 में नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी की मदुरै यात्रा का भी स्मरण कराया, जब वे महान स्वतंत्रता सेनानी पसुम्पोन मुथुरामलिंगा थेवर जी के निमंत्रण पर वहां पहुंचे थे. उस ऐतिहासिक क्षण ने क्षेत्र के असंख्य देशभक्तों के हृदय में स्वतंत्रता की अलख जगाई.

स्वतंत्रता सेनानियों की गौरवगाथा

स्वतंत्रता सेनानी चाहे उत्तर में कश्मीर से हों या दक्षिण में तमिलनाडु से, पश्चिम में गुजरात से हों या पूर्व में असम से—देश के सभी क्षेत्रों, वर्गों, आयु समूहों और लिंगों के लोगों ने भारत माता की स्वतंत्रता के साझा लक्ष्य के लिए एकजुट होकर संघर्ष किया. प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान प्रतिरोध की अमर प्रतीक बनीं रानी लक्ष्मीबाई जी का शौर्य, मंगल पांडे जी का साहस और बाल गंगाधर तिलक जी का वह निर्भीक उद्घोष—स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा—स्वतंत्रता की ओर बढ़ते राष्ट्र के प्रत्येक कदम को शक्ति प्रदान करता रहा. इसी क्रम में वी. ओ. चिदंबरम पिल्लै जी ने भारत का पहला स्वदेशी पोत-परिवहन उद्यम शुरू कर औपनिवेशिक शासन केआर्थिक प्रभुत्व को चुनौती दी. इससे यह सिद्ध हुआ कि स्वतंत्रता का संघर्ष केवल रणभूमि तक सीमित नहीं था, बल्कि आर्थिक और व्यावसायिक क्षेत्र में भी लड़ा गया था.

अंडमान स्थित राष्ट्रीय स्मारक सेल्युलर जेल की मेरी यात्रा एक अन्य अत्यंत प्रेरणादायी क्षण रही.इसी जेल में भारत माता के महान सपूत वीर सावरकर जी, योगेंद्र शुक्ल जी, बटुकेश्वर दत्त जी, सचिंद्र नाथ सान्याल जी और अनेक अन्य स्वतंत्रता सेनानियों को औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा कैद कर एकांत कारावास में रखा गया था. आज भी राष्ट्रीय स्मारक की ये दीवारें उन वीरों के साहस, उन्हें दी गई यातनाओं और सर्वोच्च बलिदान की गाथाएं सुनाती प्रतीत होती हैं, जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता और सम्मान के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया. इस यात्रा ने मुझे उन सभी राष्ट्रनायकों के प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप यह लेख लिखने को प्रेरित किया, जिन्होंने करोड़ों लोगों के हृदय में देशभक्ति की ज्वाला प्रज्वलित की और राष्ट्र को स्वतंत्रता प्राप्त करनेकी दिशा में आगे बढ़ाया.

9 अगस्त को, जब हम भारत छोड़ो आंदोलन की स्मृति मना रहे थे, मुझे अंडमान द्वीपसमूह में हर घर तिरंगा अभियान का शुभारंभ करने का अवसर प्राप्त हुआ. वर्ष 1942 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने भारत छोड़ो आंदोलन का आह्वान करते हुए राष्ट्र को करो या मरो का ओजस्वी नारा दिया था. इस आह्वान के परिणामस्वरूप पूरे देश में आजादी प्राप्त करने की प्रबल आकांक्षा व्याप्त हो गई.

आज हमें उसीस्वतंत्रता सेनानी पीढ़ी के कारण स्वतंत्रता की हवा में सांस लेने और लोकतांत्रिक व्यवस्था के अंतर्गत संवैधानिक अधिकारों के साथ जीवन जीने का सौभाग्य प्राप्त है, जिन्होंने अपने समय की औपनिवेशिक शक्तियों के विरुद्ध संघर्ष किया. उस समय देश के कोने-कोने में करोड़ों वीर स्वतंत्रता सेनानी अटूट समर्पण और त्याग के साथ इस संघर्ष मेंशामिलहुए तथा अनेक वीरों ने भारत माता की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणन्यौछावर कर दिए.

राज्यपाल और यू.टी. चंडीगढ़ के प्रशासक गुलाब चंद कटारिया जी का जनता के नाम संदेश

वीर और गुरु की आत्मा है पंजाब

गुलाब चंद कटारिया
राज्यपाल

मेरे प्यारे पंजाबवासियों,

आप सभी को भारत की स्वतंत्रता की 79वीं वर्षगांठ की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं. आज का यह पावन दिवस प्रत्येक भारतीय के लिए गर्व, आभार, आत्मचिंतन और नए संकल्प का अवसर है. आज जब हमारा प्यारा तिरंगा पूरे गौरव के साथ आकाश में लहरा रहा है, तब हमारे हृदय में उन असंख्य ज्ञात और अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति श्रद्धा उमड़ती है, जिन्होंने भारत माता की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया. मैं उन सभी महान स्वतंत्रता सेनानियों, क्रांतिकारियों और शहीदों को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूं, जिनके त्याग और बलिदान के कारण आज हम स्वतंत्र भारत में सम्मान और स्वाभिमान के साथ जीवन जी रहे हैं.

मैं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, डॉ. बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, सरदार वल्लभभाई पटेल, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक सहित उन लाखों स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं, जिन्होंने भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया. मैं हमारी सशस्त्र सेनाओं, अर्धसैनिक बलों और पुलिस के उन वीर जवानों को भी नमन करता हूं, जो देश की सीमाओं और आंतरिक सुरक्षा की रक्षा के लिए दिन-रात समर्पित हैं. विशेष रूप से मैं उन वीर परिवारों के प्रति अपना गहरा आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने राष्ट्र की रक्षा में अपने प्रियजनों का बलिदान दिया है. इस वर्ष के स्वतंत्रता दिवस की थीम आज़ादी का सम्मान और स्वर्णिम भविष्य का निर्माण है. इसका अर्थ है कि हम एक ओर अपने अमर शहीदों के महान बलिदानों को नमन करें, और दूसरी ओर उसी से प्रेरणा लेकर आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सशक्त एवं विकसित भारत की नींव रखें.

भारत के स्वतंत्रता संग्राम की गाथा पंजाब के योगदान के बिना पूरी नहीं हो सकती. इस पवित्र धरती ने लाला लाजपत राय, शहीद-ए-आजम भगत सिंह, शहीद ऊधम सिंह, करतार सिंह सराभा और असंख्य ऐसे वीर सपूत दिए, जिन्होंने मातृभूमि की स्वतंत्रता को अपने जीवन से भी अधिक महत्व दिया. गदर आंदोलन की क्रांतिकारी चेतना हो, जलियांवाला बाग का अमर बलिदान हो या आजादी की लड़ाई में पंजाब के गांवों और शहरों से उठी राष्ट्रभक्ति की आवाज, इस धरती ने स्वतंत्रता के यज्ञ में कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा. मैं स्वयं को अत्यंत सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे उस पंजाब राज्य का राज्यपाल होने का गौरव प्राप्त हुआ है, जिस पंजाब की आत्मा में वीरता के साथ-साथ सेवा, परिश्रम और मानवता भी बसती है. यह वह धरती है जहाँ श्री गुरु नानक देव जी ने 'किरत करो, नाम जपो, वंड छको' के जरिए मानवता और सेवा का, तथा 'पवन गुरू, पानी पिता, माता धरत महत के जरिए प्रकृति प्रेम का अमर संदेश दिया. और यही वह भूमि है, जहाँ श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने धर्म और राष्ट्र की खातिर अपना पूरा परिवार वार दिया और सरबंसदानी कहलाकर दुनिया के सामने त्याग की सर्वोच्च मिसाल पेश की.

पंजाबियों ने केवल स्वतंत्रता संग्राम में ही नहीं, बल्कि आज़ादी के बाद भी देश की एकता, अखंडता और संप्रभुता की रक्षा में अद्वितीय साहस और समर्पण का परिचय दिया है. वर्ष 1965 और 1971 के युद्ध हों, 1999 का कारगिल संघर्ष हो, या फिर राष्ट्र की सुरक्षा सुनिश्चित करने वाले च्सर्जिकल स्ट्राइकज् और हालिया च्ऑपरेशन सिंदूरज् जैसे साहसिक अभियान, पंजाब के वीर सपूतों ने सदैव मातृभूमि की रक्षा में अग्रणी भूमिका निभाई है. स्वतंत्रता के बाद जब देश के सामने खाद्य सुरक्षा की गंभीर चुनौती थी, तब भी पंजाब ने अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई. हरित क्रांति के माध्यम से हमारे मेहनतकश किसानों ने भारत को खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में ऐतिहासिक योगदान दिया. आज जब हम 'विकसित भारत' की ओर बढ़ रहे हैं, हमें आधुनिक कृषि, फसल विविधीकरण और जल संरक्षण को अपनाकर पंजाब की इस गौरवशाली कृषि परंपरा को और मजबूत करना है.

स्वतंत्रता की 79वीं वर्षगांठ पर हमें अपने गौरवशाली अतीत से प्रेरणा लेते हुए वर्तमान की उपलब्धियों और भविष्य की दिशा पर भी विचार करना चाहिए. मुझे प्रसन्नता है कि पंजाब आज विकास, सामाजिक न्याय, कृषि समृद्धि, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं, रोजगार, महिला सशक्तिकरण और आधुनिक बुनियादी ढांचे की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है. वर्ष 2026 पंजाब की महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण वर्ष बन रहा है.

शिक्षा के क्षेत्र में भी पंजाब नई उपलब्धियां अर्जित कर रहा है. वर्ष 2026 में सरकारी विद्यालयों के 882 विद्यार्थियों ने 'नीट', 361 ने 'जे.ई.ई. मेन्स' और 64 ने 'जे.ई.ई. एडवांस' जैसी कठिन परीक्षाओं में सफलता प्राप्त की है. मैं अपने युवा साथियों से कहना चाहता हूं, च्बड़े सपने देखिए, लेकिन उन्हें पूरा करने के लिए अनुशासन, परिश्रम और दृढ़ संकल्प को अपना साथी बनाइए. स्वास्थ्य के क्षेत्र में 'मुख्यमंत्री सेहत योजना' के तहत अब तक 2 लाख 91 हजार मरीज लगभग 1 हजार 44 करोड़ रुपये का नकदरहित उपचार प्राप्त कर चुके हैं. राज्यभर में 1 हजार 90 आम आदमी क्लीनिक सेवाएं दे रहे हैं और इनमें अब तक 5 करोड़ 94 लाख से अधिक रोगी-आगमन दर्ज किए जा चुके हैं. हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा प्रत्येक नागरिक तक सहजता से पहुंचे.

पंजाब की जनता से किए हर वादे को एक-एक कर निभाया

भगवंत सिंह मान
मुख्यमंत्री, पंजाब

आज, हमारे महान देश ने आजादी के 79 साल पूरे कर लिए हैं। इस अरसे के दौरान भारत अमन-शांति, सद्भावना, तरक्की और खुशहाली के प्रति अटूट विश्वास और दृढ़ वचनबद्धता के साथ विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश के रूप में उभरा है. इस पवित्र दिवस पर मैं पंजाब और देश-विदेश में बसने वाले समस्त पंजाबियों की ओर से देशवासियों को दिल की गहराइयों से मुबारकबाद देता हूं. मैं सबकी अच्छी सेहत, खुशहाली और रौशन भविष्य की कामना करता हूं.

इस ऐतिहासिक दिन पर मैं भारत के राष्ट्रीय आजादी संघर्ष के उन जाने-अनजाने स्वतंत्रता सेनानियों, शहीदों और देशभक्तों के आगे श्रद्धा और सम्मान के साथ सिर झुकाता हूं, जिन्होंने बहादुरी और साहस का प्रदर्शन करते हुए हमारे देश को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के जुए से मुक्त करवाने के लिए बड़ी कुर्बानियां दी. मार्च, 2022 में पद संभालने के बाद मेरी सरकार ने महान स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को साकार करने के लिए हर संभव कदम उठाया है, इस बारे में आपको अवगत करवाना चाहता हूं. प्रदेश के इतिहास में पहली बार किसी सरकार ने राष्ट्रीय नेताओं के सम्मान के रूप में लोगों से किया हरेक वादा पूरा किया है.

इतिहास के झरोखे से देखें तो आजादी की लहर में पंजाबियों की विलक्षण और बेमिसाल भूमिका को बार-बार दोहराने की जरूरत नहीं है, क्योंकि अपनी जानें निछावर करने वाले या ब्रिटिश यातना का सामना करने वाले 80 प्रतिशत योद्धाओं और देशभक्तों ने उम्र कैद भुगती, फांसी की सजाएं काटी और अंडमान निकोबार की सैलूलर जेल में कालेपानी का संताप भी भोगा. इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि बहादुर पंजाबियों ने सदियों पुराने ब्रिटिश राज को खत्म करने के लिए कई आंदोलनों का नेतृत्व किया. पंजाब के सपूत-भाई महाराज सिंह हमारी मातृभूमि को विदेशी साम्राज्यवाद से मुक्त करवाने के लिए अपनी जान न्यौछावर करने वाले पहले शहीद थे.

पंजाब के महान शहीदों, शहीद-ए-आजम सरदार भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, लाला लाजपत राय, शहीद ऊधम सिंह, करतार सिंह सराभा, डा. दीवान सिंह कालेपानी, बाबा राम सिंह और अन्य अनेकों शहीदों ने आजादी हासिल करने के लिए अपने खून का एक-एक कतरा बहा दिया. भारतीय आजादी संघर्ष के दौरान कूका लहर, गदर लहर, बब्बर अकाली लहर, कामागाटामारू घटना, किसान आंदोलन के अलावा जलियांवाला बाग का साका, गुरुद्वारा सुधार लहर, जैतो का मोर्चा और परजा मंडल आंदोलन जैसी ऐतिहासिक लहरों का अमूल्य योगदान है. यह संघर्ष आज के दिवस पर हमारे देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त करवाने में बहादुर पंजाबियों के साहस की याद दिलाता है. सीमावर्ती राज्य होने के कारण पंजाब ने बंटवारे का संताप भी भोगा और उसके बाद दुखों और पीड़ा से भरे समय को भी पंजाबियों को अपने ऊपर झेलना पड़ा, जिसमें लाखों लोग बेघर हुए और उजड़ गए.

मैं इस मौके पर अपने पंजाबी भाई-बहनों के उस मिसाली योगदान की भी सराहना करता हूं, जिन्होंने एक तरफ लंबे संघर्ष के बाद हासिल की गई भारत की आजादी की पूरे उत्साह से रक्षा की है और दूसरी तरफ सर्वांगीण विकास के नए युग की शुरुआत की. जब भी भारत को आंतरिक या बाहरी हमले की चुनौती का सामना करना पड़ा, बहादुर पंजाबियों ने हमेशा आगे होकर देश की एकता और अखंडता की रक्षा की है. 1965 और 1971 की भारत-पाक जंगों के साथ-साथ कारगिल जंग, जम्मू-कश्मीर और भारत के अन्य हिस्सों में आतंकवाद विरोधी कार्रवाइयों में पंजाब के बहादुर फौजियों की मिसाली और सक्रिय भूमिका को हमेशा याद रखा जाएगा और यह आने वाली पीढ़ियों में देशभक्ति की भावना जगाने के लिए प्रेरित करती रहेगी. स्वतंत्रता दिवस खुशी और जश्न का मौका होने के साथ-साथ आत्म-परीक्षण करने और राज्य के तेजी से विकास के लिए नए लक्ष्य निर्धारित करने का भी समय है. हमें एक सुखद और बराबरी वाला समाज सृजित करके अपने स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को पूरा करने के लिए अपने आप को फिर से समर्पित करना चाहिए. एक देशवासी होने के नाते हमें अपने अंदर राष्ट्रवाद और देशभक्ति की भावना को बनाए रखना चाहिए, जो कि मजबूत राष्ट्र का मूल आधार है. यह सच भी किसी से छिपा-छिपा नहीं है कि राज्य के मेहनती और जिद्दी किसानों ने देश को अनाज उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने में अहम भूमिका निभाई है. हमारे मेहनती किसानों ने देश का पेट भरने के लिए राज्य के अमूल्य प्राकृतिक संसाधनों—उपजाऊ जमीन और पानी की कुर्बानी दे दी और 60 के दशक से लेकर अब तक पंजाब के किसान देश के अनाज भंडार में योगदान देते आ रहे हैं. हालांकि, आजादी के 79 बीत जाने के बाद भी हमारे स्वतंत्रता सेनानियों और शहीद-ए-आजम भगत सिंह तथा बाबा साहेब डा. बी.आर. अंबेडकर जैसे महान राष्ट्रीय नायकों के सपने अधूरे हैं.

शिक्षा क्रांति- पंजाब सरकार ने सभी सरकारी स्कूलों के बुनियादी ढांचे को सुधारने के लिए 'पंजाब शिक्षा क्रांति' की शुरुआत की है, जिसके तहत सरकार 118 सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूलों को 'स्कूल ऑफ एमिनेंस' में बदलने के लिए वचनबद्ध है, जो स्मार्ट क्लासरूम, आधुनिक लैब और खेल मैदानों से लैस होंगे. लगातार सुधारों और राष्ट्रीय स्तर की मान्यता के कारण पंजाब राज्य, स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में भारत का नंबर वन राज्य बनकर उभरा है और इसने केरल, महाराष्ट्र और गुजरात जैसे अग्रणी राज्यों को भी पीछे छोड़ दिया है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12350

- डॉ. सागर खादीवाला

1		2		■	3		4
	■		■	5		■	
6	7	■	■	■	8	9	
■	10	11	■	12			■
13			■		■	14	15
■	■	16	17		■	18	
19	20	■		■	21	■	
22		■	■	23			

ऊपर से नीचे
1. दर्पण शीशा 2. किनारा, कूल 3. राजस्थान में एक प्रसिद्ध संत की दरगाह का शहर 4. राज्यसुख भोग कराना 7. दैत्य, असुर 9. जोर से दबाना 11. मार डालने वाला, विष का प्रभाव नष्ट करने वाला 12. बुराई या निंदा करना 15. प्रणाम, सलाम, किसी बात की स्वीकृति (उर्दू) 17. रस्सी 19. नरेश 20. इच्छा, इरादा, विचार 21. जीत, विजय, विष्णु के एक द्वारपाल का नाम

बाएं से दाएं
1. स्वभावत:, आदत के अनुसार 3. बिना हाथ का, कर से मुक्त (सं.) 5. झंडा, पताका, निशान (सं.) 6. अपनी मांग-शिकायत आदि की ओर ध्यान दिलाने के लिए बार-बार बुलंद की जानेवाली सामूहिक आवाज 8. भेड़ का बच्चा 10. माफी 12. रसहीन 13. जाफरान 14. बुरी आदत 16. काम को अंजाम देना 18. वह औषधि जो नाक से सूंघी जाए 19. भगवान, श्रीरामचंद्र 22. ज्ञान, प्राण 23. सबसे अधिक प्रिय, पति, स्वामी

Solution 12349

आ	नं	द	म	य	■	■	पी
लू	■	मि	त	■	झ	ग	ड़ा
■	पू	त	■	नि	प	ट	■
बा	ज	■	प्रा	धि	क	र	ण
न	क	ल	ची	■	ना	■	■
गी	■	थ	■	य	■	सा	म
■	आ	प	बी	ती	■	ह	द
श	प	थ	■	म	क	स	द

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारम्भ में राजनैतिक लाभ होगा. सामाजिक कार्यों में संलग्नता रहेगी. वर्ष के मध्य में अत्याधिक परिश्रम के उपरांत मानसिक लाभ होगा. शारीरिक कष्ट और मानसिक चिन्ता का सामना करना होगा. दौड़धूप और परिश्रम करने पर ही सफलता के योग हैं. वर्ष के अन्त में राजनैतिक लाभ प्राप्त होगा. दूरा-दराज की यात्रा का योग है.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को व्यवसाय में वृद्धि होगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को शिक्षा प्रतियोगिता में व्यस्तता रहेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को कार्यों में समय अनुकूल रहेगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक लाभ होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को सामाजिक कार्यों में संलग्नता रहेगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को श्रम साध्य कार्यों का योग है. मकर और कुम्भ राशि के व्यक्तियों को परिश्रम के उपरांत मानसिक लाभ और संतुष्टि प्राप्त होगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, सुंदर और हष्टपुष्ट, गंभीर, महत्वाकांक्षी और उदार होगा, परोपकारी तथा ईमानदार रहेगा, शिक्षा अच्छी रहेगी, महत्वपूर्ण विषयों का ज्ञाता होगा, ये निरंतर वृषभे बढ़ने की कोशिश करेगा, ईश्वर भक्त होगा.

मेष- युवाओं को उच्च अध्ययन हेतु दौड़धूप करना पड़ेगी, जोखिम के कार्यों से दूर रहें. स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा, दूर दराज की यात्रा हो सकती है, मन में प्रसन्नता रहेगी.

वृषभ- आप संबंधों को बुद्धिमानी के साथ निभाने का प्रयास करेंगे, धार्मिक आयोजन में शामिल होंगे, जमीन जायजाद तथा कोर्ट कचहरी के कार्यों में सफलता मिलेगी.

मिथुन- सुख सुविधा पर खर्च की रूपरेखा बनेगी, उलझे मामले सुलझा लेंगे, आर्थिक चिन्ता रहेगी, कार्यों में परिश्रम की अधिकता रहेगी, खर्च होगा.

कर्क- परिवार में शुभ कार्यों का निर्णय होगा, कार्यों को समय पर पूरा करने का प्रयत्न करें. दिनचर्या नियमित एवं अनुकूल रहेगी, सामंजस्य बना रहेगा.

सिंह- आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी, व्यापार लाभदायक रहेगा, व्यवसायिक कार्यों के प्रति यात्रा करना होगा, अतिथि के आगमन का योग है. मानसिक प्रसन्नता रहेगी.

कन्या- दाम्पत्य जीवन में अनुकूलता रहेगी, राज्य पक्ष के कार्यों में सफलता मिलेगी, वाहन चलाते समय सावधानी रखें, यात्रा प्रवास आदि में व्ययभार होगा.

तुला- कामकाज के अवरोध दूर होंगे, सत्कार्यों में मन लगेगा, सोचे हुये कार्य बनने का योग है. सामाजिक कार्य, पूजा पाठ आदि में व्यय होगा. दिन शुभ अनुकूल है.

वृश्चिक- संतान के कार्यो पर सफलता मिलेगी, व्यापार में लाभ होगा. व्यर्थ की चिंता तथा तनाव दूर होगा, मानसिक प्रसन्नता एवं शांति बनी रहेगी.

धनु- आजीविका में अपने लाभ की ओर प्रयासरत् रहेंगे, बुद्धिमानी से समस्या का समाधान होगा. कोई शुभ समाचार प्राप्त होने से हर्ष रहेगा. विवाद एवं तनाव से बचें.

मकर- विवादास्पद मामले सुलझ सकते हैं, लाभदायी सौदे हाथ में आने का योग है, कामकाज में सावधानी रखें, जल्दबाजी में कोई निर्णय हो सकता है, सावधानी रखें.

कुम्भ- जरूरत से ज्यादा खर्च आपको परेशानी में ड़ाल सकता है, सुख सुविधा पर खर्च होगा, व्यापार व्यवसाय में परिवर्तन की संभावना रहेगी.

मीन- दूसरों की परेशानी साझा करना सीखें, रिश्तों में नजदीकी बढ़ेगी, मित्रों के सहयोग से समस्या का समाधान होगा, लाभदायक अवसरों की प्राप्ति होगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

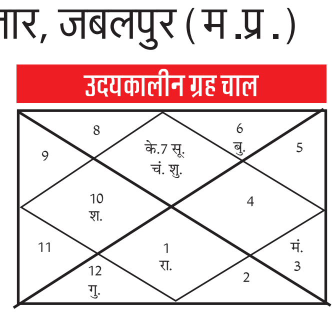

पंचांग

रा.मि. 24 संवत् 2083 श्रावण शुक्ल तृतीया शनिवासरे रात 7/14, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रे प्रात: 6/18, शिव योगे दिन 10/38, तैतिल करणे सू.उ. 5/32, सू.अ. 6/28, चन्द्रचार सिंह दिन 12/18 से कन्या, शु.रा. 5, 7,8,11,12,3 अ.रा. 6,9,10,1,2,4 शुभांक- 7,9,3.

व्यापार भविष्य

श्रावण शुक्ल तृतीया को पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के प्रभाव से सरसों, अरंडी, कपास, सोना, चांदी, जूट, पाट, बारदाना, हैसियन के भाव में तेजी का रूख रहेगा. धान्यों में मंदी की चाल चलेगी. भाग्यांक 3712 है.

SUDOKU 7482

	8	5						
3								
			6			7	4	
6			2		4			
1								8
			7		5			3
	4	7			1			
								6
						5	2	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7481

4	3	9	2	6	8	5	1	7
8	1	6	7	4	5	9	2	3
7	5	2	3	9	1	6	4	8
1	7	5	4	2	6	8	3	9
6	4	3	8	5	9	2	7	1
2	9	8	1	7	3	4	5	6
5	2	1	6	8	7	3	9	4
9	8	7	5	3	4	1	6	2
3	6	4	9	1	2	7	8	5